International Journal of Applied Research 2018; 4(6): 380-382

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(6): 380-382
www.allresearchjournal.com
Received: 12-04-2018
Accepted: 16-05-2018

नेहा कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी–विभाग, ल.ना.मि, विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
नेहा कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी–विभाग, ल.ना.मि, विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

भाषा शिक्षण का सोशल मीडिया पर प्रभाव

नेहा कुमारी

सारांशः
जीवन और भाषा का अटूट रिश्ता है। जीवन के बहुआयामी एकरूप की अभिव्यक्ति हेतु भाषा का उपयोग होता है। जिससे भाषा के स्वरूप में भिन्नता आती है। जीवन की सम्पूर्ण अभिव्यक्तियाँ भिन्न–भिन्न माध्यमों द्वारा होती है और प्रत्येक माध्यम का व्याकरण अलग–अलग होता है, उसकी अन्तर्वस्तु भिन्न होती है। इसी से भाषा में भी स्तर–भेद एवं स्वरूप–भेद दिखाई पड़ता है। सोशल मीडिया अपनी युवावस्था में है। युवा होने का अर्थ है उसने अपनी स्वतंत्र अस्मिता प्राप्त कर ली है। सोशल मीडिया एक अपरंपरागत मीडिया है जो कि एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है, जिसे इंटरनेट के माध्यम से पहुँच बना सकते हैं।

प्रस्तावना
भाषा शिक्षण का सोशल मीडिया पर प्रभाव से इनकार नहीं किया जा सकता। जैसे–जैसे मीडिया अपने को नवीनतम तकनीकों से संयुक्त करता जा रहा है, वैसे–वैसे भाषा–शिक्षण में वह मददगार भी बनता जा रहा है। इसीलिए आज भाषा शिक्षण का सोशल मीडिया पर प्रभाव को सकारात्मक मानने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। यह सच है कि मीडिया अपने दो प्रमुख रूपों प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक के माध्यम से भाषा–शिक्षण में अपना योगदान देता आया है। इसी के साथ यह भी सच है कि भाषा–शिक्षण में दृश्य–श्रव्य सामग्री का अपना महत्त्व है। ''भाषा का प्रत्येक शिक्षक ब्लैक बोर्ड, चार्ट, फ्लैश कार्ड, स्लाइड्स आदि का प्रयोग सामान्यतः करता रहा है, लेकिन तकनीकी और यांत्रिकी विकास ने भाषा–शिक्षण को स्वाश्रित (ऑटोमेटिक) बनाने की दिशा में जो पहल की है, उसका अपना महत्त्व है।'' [1] यह बात अलग है कि पहले से चले आते दृश्य–श्रव्य उपकरणों के माध्यम से शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावकारी बनाता है तथा विद्यार्थी से उसका सीधा साक्षात् होता रहता है, किंतु यांत्रिक उपकरणों में तकनीकी सुधार और भाषा प्रयोगशाला के अधुनातन विकास से शिक्षक–शिक्षार्थी के बीच वैसा सीधा संपर्क नहीं रह जाता। परंपरा के टूटने और नवता के समावेश को ही विकास की प्रक्रिया के साथ जोड़कर देखा जा सकता है। इसलिए भाषा–शिक्षण में यदि शिक्षक/शिक्षार्थी के बीच कोई खाई बनती भी है तो भी यह संतोषकारी है कि भाषा–शिक्षण के स्वाश्रितीकरण (ऑटोमेटेशन) की दिशा में पहल तो हो रही है। ''कहना न होगा कि इस प्रक्रिया में कंप्यूटर की भूमिका की कोई बराबरी नहीं है। उसी के प्रयत्नों से भाषाशिक्षण में सामूहिकता का चलन बढ़ा है। यानी एक विशेष छात्र वर्ग के लिए एक मानक पाठ की योजना का यथार्थ अपना प्रभावकारी रूप धारण कर सका है।'' [2] इसके क्रियान्वयन में संचार माध्यमों–रेडियो और दूरदर्शन ने अपनी सराहनीय सहयोगी भूमिकाओं का निर्वहन किया है। इस तरह भाषा–शिक्षण में मीडिया का यह एक सार्थक हस्तक्षेप माना जा सकता है। बावजूद इसके कि इस प्रविधि में शिक्षक का शिक्षार्थी के साथ प्रत्यक्ष संबंध नहीं रहता। इस प्रक्रिया में जो सामग्री तैयार की जाती है, वह पूर्ण रूप से स्वयं शिक्षक का कार्य करती है। आधुनिक शिक्षाप्रणाली के अंतर्गत हो रहे विभिन्न भाषा–प्रौद्योगिकी संबंधित शोध एवं विकास इसके प्रयोगात्मक पक्ष को अधिक सुदृढ बनाने में मददगार हैं, जिनसे संचार माध्यमों एवं सोशल मीडिया को अपनी भूमिकाओं के निर्वहन में काफी सुगमता रहती है।

आज इक्कीसवीं सदी में सूचना क्रांति एवं प्रौद्योगिकी में हो रहे बदलावों ने मानवीय सामाजिक सरोकारों को एक नए दृष्टिकोण से देखने के लिए विवश कर दिया है। सच तो यह है कि सूचना प्रौद्योगिकी की इस नई क्रांति ने जीवन–मूल्यों को एक नया वैज्ञानिक एवं सामाजिक आधार प्रदान किया है। इसका असर हमारे रोजमर्रा के जीवन–प्रसंगों में भी दिखाई देने लगा है। इस बदले हुए परिवेश में शिक्षा तथा शैक्षिक मूल्यों में आगे परिवर्तनों से भाषा–शिक्षण भी अछूता नहीं है। सूचना–संचार प्रौद्योगिकी, प्रसारण माध्यमों–रेडियो, दूरदर्शन, वीडियो कॉन्फ्रेंस, कंप्यूटर फॉण्ट कोड तथा नई साइबर दुनिया ने भाषा–शिक्षण का चेहरा पूर्णतः बदल दिया है।

जहाँ तक भाषा शिक्षण का सोशल मीडिया पर प्रभाव का सवाल है तो वह भी नित नवीन आविष्कारों एवं प्रयोगों तथा प्रविधि–प्रक्रिया में उसका सहयोगी साबित हो रहा है। ''सोशल मीडिया इलेक्ट्रॉनिकी की उपज है। या यों कहें कि सोशल मीडिया का स्वरूप इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर आधारित है।

कंप्यूटर, स्मार्टफोन तथा इंटरनेट का उपयोग करते हुए लोग जो एक–दूसरे को सूचना अथवा संदेश देने तथा परस्पर संबंध बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं, वह समस्त कार्य–व्यापार सोशल मीडिया की कार्य परिधि के अंतर्गत आता है।'' [3] फेसबुक, ट्वीटर, पिंटरेस्ट, सोशल नेटवर्किंग, मोबाइल एप्स, यू–ट्यूब और सोशल टी.वी., वेब डिजाइन और ब्लॉगिंग, सोशल मीडिया न्यूज और अपडेट्स आदि सोशल मीडिया के प्रभावी माध्यम और प्रकार हैं। ''सोशल मीडिया वेबसाइट्स के उदाहरण हैं–सोशल बुकमार्किंग, सोशल न्यूज, सोशल नेट वर्किंग, सोशल फोटो ऐंड वीडियो शेयरिंग और विकीपीडिया आदि।'' [4] यहाँ यह ध्यातव्य है कि ये ही सोशल मीडिया के वेबसाइट्स नहीं है बल्कि कोई भी वेबसाइट्स जिसके माध्यम से लोग एक–दूसरे को सूचना देने तथा परस्पर संबंध विकसित करने का कार्य करते हैं, वह सोशल मीडिया की वेबसाइट से है। विश्व बाजार तथा भूमंडलीकरण के साथ–साथ मीडिया की जो विस्फोटक चकाचौंध आई है, उसने एक नया शैक्षिक साइबर स्पेस पैदा किया है। विभिन्न वेबसाइटों के जरिए भाषा–शिक्षण एवं ब्रॉडबैंड क्रांति के चलते इंटरनेट विश्व सूचना के केंद्र में स्थापित हो गया है। उस ग्लोबल नेटवर्किंग ने भाषा–शिक्षण को भी प्रभावित किया है। यहाँ ''जॉर्ज ऑरविल की 1894 ई. में की गई भविष्यवाणी का स्मरण आवश्यक है, जिसमें उन्होंने कहा था, 'भविष्य में एक ऐसा बुद्धिबक्सा निर्मित होगा, जो समूचे विश्व के जनमत को नियंत्रित करेगा।' आज उनका यह कथन अक्षरशः सच साबित हो रहा है। सचमुच 'बुद्धिबक्सा' ने संपूर्ण भूमंडल पर अपना अधिकार जमा लिया है।'' [5] भला भाषा–शिक्षण की प्रक्रिया उसके गिरफ्त से बाहर कैसे रह सकती है।

भाषा–शिक्षण में कंप्यूटर की भूमिका का कोई स्थानापन्न नहीं है। भाषा–प्रयोगशाला में इसका मशीनी अनुवाद, कृत्रिम वाक् संश्लेषण, पाठ–विश्लेषण, कोश निर्माण विज्ञान आदि कई क्षेत्रों में उपयोग यह दरशाता है कि भाषा–शिक्षण में यह एक बहुत ही उपयोगी यंत्र है और इसलिए इसकी व्याप्ति काफी है। भाषा के विद्यार्थी इसकी सहायता से प्रभावी रूप में और अल्पावधि में भाषा अर्जन करने में अपनी सक्षमता सिद्ध कर रहे हैं, क्योंकि इसके माध्यम से उन्हें तत्काल सूचनाओं की प्रति प्राप्ति (फीड बैक) होती है। त्रुटियों की जानकारी मिलती है, जिनसे परिष्कार ओर परिमार्जन का कार्य संभव होता है। भाषा–दक्षता संबंधी सूचना उपलब्ध होती है और इन सभी सूचनाओं के आधार पर छात्र विशेष की आवश्यकता के अनुसार पाठ–निर्देश और पाठ अभ्यास मिलते हैं। इस तरह भाषा–शिक्षण में कंप्यूटर अनुप्रयोग की अपार संभावनाएं हैं। इसके उपयोग से एक ओर जहाँ विषय रुचिकर लगता है तथा आसानी से समझ में आता है, वहीं दूसरी ओर अल्प अवधि में अधिक जानकारी प्राप्त होती है। आज कंप्यूटर की गणना में तीव्रता आई है और इसकी मेमोरी पहले से हजार गुनी हो गई है। प्रोसेसिंग ऐबिलिटी में भी निरंतर बदलाव देखा जा रहा है। चूँकि इंटरनेट, वेब तथा मल्टीमीडिया जैसे नवीन तकनीक और माध्यम नित प्रति अपना अस्तित्व और दायरा बढ़ा रहे हैं, इसलिए कंप्यूटर की क्रिएटिविटी, प्रोडक्टिविटी तथा मूवमेंट्स आदि में लगातार वृद्धि हो रही है। हार्ड तथा सॉफ्टवेयर में हो रहे नवीन आविष्कारों तथा शोधों से कंप्यूटर की दिशा–दशा में जो बदलाव हो रहा है, उससे भाषा शिक्षण में भी गति आई है। ''1992 ई. में 'कंप्यूटर ऐंड लैंग्वेज लर्निंग' नाम से एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी। उसकी मुख्य बातों में फिगर एनालिसिस, यूजर मॉडलिंग ग्रामर पर लोगों का ध्यान अधिक गया था। इस पर काफी चर्चा भी हुई थी।'' [6] इसे भाषाई क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम माना गया था। इसके बाद एक और पुस्तक आई 'डिजाइन एप्लीकेशन' नाम से। 'लैंग्वेज लर्निंग सिस्टम' एक व्यापक अवधारणा लेकर आया। इंटेलिजेंस टोलिंग सिस्टम, नैचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग ऑटोमेटिक स्पीच जैसे पक्ष इसमें जुड़े, किंतु अभी तक लैंग्वेज लर्निंग सिस्टम में मशीन ट्रांसलेशन का पक्ष नहीं जुड़ा था। ''2001 में प्रकाशित 'हार्टिकल स्टंट एप्लीकेशन' में मशीन ट्रांसलेशन का एक नया पक्ष जुड़ा, जिससे भाषा–शिक्षण की दुनिया में बदलाव आया। इन्हीं दिनों इ–लर्निंग का एक नया सिस्टम उभरकर सामने आया। कंप्यूटर के माध्यम से शिक्षण हेतु पाठ्यक्रम एवं भाषाई अनुप्रयोग का विकास तथा कंप्यूटर में भाषाई ज्ञान के संवर्धन रेका दी सम्मेलन हेतु शोध एवं अनुप्रयोग संबंधित प्रायोगिक सामग्री का विकास भाषा प्रौद्योगिकी क्षेत्र के चिंतन बिंदु बने।'' [7] इस पर विचार विमर्श हुआ तथा क्रियान्वयन की दिशा में कदम उठाए गए। यहाँ यह ध्यातव्य है कि आज कंप्यूटर की संसाधन क्षमता और इंटरनेट द्वारा संप्रेषण क्षमता तथा मल्टीमीडिया जैसे सॉफ्टवेयर के कारण श्रव्य–दृश्य आधारित अनेक अनुप्रयोग कक्षा की सीमा से बाहर निकलकर वैश्विक कक्षा का निर्माण कर रहे हैं। जहाँ तक हिंदी भाषा की बात है तो कंप्यूटर द्वारा विशेष पढ़ाई, जिसमें कंप्यूटर में कार्य करने के लिए कंप्यूटर के फॉण्ट अथवा इंटरनेट ब्लॉग एवं हिंदी में चेटिंग की सुविधा उपलब्ध है। इ–लर्निंग को सोशल मीडिया से जोड़कर भाषाशिक्षण को व्यापक बनाने में मदद ली जा सकती है। आज सोशल मीडिया के जो विभिन्न स्वरूप हैं, वे किसी–न–किसी रूप में भाषा–शिक्षण में अपनी भूमिका निभाने में सक्षम हैं।

आज सोशल मीडिया बहुत सशक्त है। उसकी पहुँच में लगभग हर शिक्षित व्यक्ति है। उसका कार्यक्षेत्र केवल सूचनाओं को उपलब्ध कराने तक ही सीमित नहीं रह गया है। सामान्य व्यक्ति मीडिया से केवल इसलिए नहीं जुड़ता कि उसे कुछ सूचनाओं/समाचारों और घटनाओं का खुलासा चाहिए बल्कि वह मीडिया से इसलिए भी जुड़ना चाहता है कि उसकी भाषा, संस्कृति और संस्कार परिष्कृत हो सकें। यह बात अलग है कि सोशल मीडिया यह करने में अभी सक्षम इसलिए नहीं है कि उसमें भाषा परिष्कार और संवेदनशीलता का वह स्तर नहीं है, जो कभी प्रिंट मीडिया में हुआ करता था। वैसे आज का प्रिंट मीडिया भी जो भाषा और संस्कार परोस रहा है, उसे पढ़कर निराशा ही होती है। अगर फेसबुक की बात करें तो इसके प्रयोक्ता सूचनाओं के आदान–प्रदान में जो भाषा प्रयोग करते हैं, उसे देख–सुनकर यह नहीं लगता कि उसमें भाषा, संस्कृति और संस्कार के परिमार्जन और ऊल–जुलूल वाक्यविधानों के आधार पर यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि फेसबुक द्वारा भाषा की परिष्कृति दूर की कौड़ी है, क्योंकि भाषा की शुद्धता का संकट तो वहाँ पहले से ही मौजूद है। यह बात अलग है कि भाषा–शिक्षण के उद्देश्य से निर्मित पाठों में किसी तरह की विसंगति अथवा भाषिक दोषों के लिए कोई अवकाश नहीं है। चूँकि यह विश्व हिंदी सम्मेलन है, इसलिए हिंदी के संदर्भ में विचार नहीं करना बेमानी होगी। आज हिंदी के संदर्भ में विचार करें तो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हिंदी को 'हिंग्लिश' बनाने पर तुला हुआ है। उसका मानना है कि वह एक ऐसी जनसामान्य भाषा का पक्षधर है, जिसे सभी समझ सकें और इसीलिए वह ऐसी भाषा के विकास में संलग्न है, जिसे 'हिंग्लिश' नाम दिया जा रहा है। उसकी दृष्टि में 'हिंग्लिश' ऐसी भाषा है, जिसमें उन सभी भाषाओं के शब्द हैं, जिन्हें लोग प्रतिदिन अपने जीवन में प्रयोग करते हैं। मीडिया की चकाचौंध में भाषानुरागियों की आँखों का चौंधिया जाना भाषा के लिए कभी भी हितकर नहीं है, क्योंकि मीडिया अपने माध्यम से जो भाषा परोस रहा है, उसमें न तो भाषिक अनुशासन है और न ही उसकी प्रतिष्ठा का कोई प्रयास। हिंदी को 'हिंग्लिश' बनते देखना कभी भी स्वीकार्य नहीं हो सकता। हिंदी के प्रसंग में एक बात यह भी कि हिंदी के प्रचार–प्रसार में देवनागरी सॉफ्टवेयरों में अनुकूलन का अभाव एक बहुत बड़ी बाधा है। इंटरनेट से डाउनलोड अथवा अपलोड करने में होनेवाली कठिनाई का एक कारण यह है कि देवनागरी के सभी सॉफ्टवेयर बाकूनरी प्रणाली के एक समान कट में नहीं बनाए गए हैं। इंटरनेट के अनेक साइटों पर श्रोमन में हिंदी लिखिए, उसका लिप्यंतरण हो जाएगाश के सिद्धांत पर हिंदी

लिखने की सुविधा है, लेकिन यहाँ रोमन लिपि जानने की अनिवार्यता भी है। साथ ही कीबोर्ड पर वर्णों की स्थिति में अंतर भी कठिनाई पैदा करता है। इसलिए देवनागरी सॉफ्टवेयर में एक समान कैरेक्टर सेटिंग प्रणाली अपनाने की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि इसके सॉफ्टवेयर में अनुकूलन की समस्या पैदा न हो। संतोष की बात यह है कि अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, केंद्रीय हिंदी निदेशालय आदि संस्थान अहिंदी भाषियों और विदेशी छात्रों को इंटरनेट के माध्यम से हिंदी भाषा सिखाने के लिए शिक्षण–सामग्री का विकास करने में जुटे हैं।

''सूचना एवं प्रौद्योगिकी में आई क्रांति ने जहाँ विश्व को एक ग्राम में बदल दिया है, वहीं बाजार ने चिंतन, विचार, व्यवहार और कार्य प्रणाली के धरातल पर मानवीय सभ्यता को आधुनिक से उत्तरआधुनिक युग में पहुँचा दिया है।'' [8] इसका परिणाम यह हुआ है कि आज नन्हे–मुन्ने बालकों तथा कलम पकड़ने वाले हाथों में रिमोट कंट्रोल, माउस और मोबाइल का आ जाना असहज और अस्वाभाविक नहीं लगता। ऐसे परिवेश में बालकों को भाषा–ज्ञान कराने की दिशा में हो रहे विचार–विमर्शों से यह छनकर आने लगा है कि धारा के विपरीत नाव बहाने से अच्छा है, धारा के अनुकूल नाव बहाई जाए और इसलिए यह जरूरी समझा जाने लगा है कि भाषाशिक्षण की सामग्री इस तरह तैयार की जाए कि उनका उपयोग सोशल मीडिया के द्वारा हो सके। इसके लिए यह जरूरी है कि सोशल मीडिया की यंत्र सामग्री शक्ति–संपन्न हो। उसकी प्रक्रिया सामग्री उन सभी समादेशों (कमांड्स) को पूरा करने की क्षमता रखती हो, जिसकी आवश्यकता पाठ–प्रस्तुति में अपेक्षित है। पाठ–सामग्री की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि वह निर्देश में और पाठ–योजना के क्रमिक संचालन के साथ ही छात्रों की त्रुटियों का विश्लेषण और समाधान प्रस्तुत कर सके। इस तरह की सामग्री का निर्माण हो भी रहा है, तभी तो सोशल मीडिया के माध्यम से भाषा शिक्षण की वकालत की जा रही है और यह कहा जा रहा है कि बालक का सोशल मीडिया से जुड़ाव उसके भाषा–ज्ञान का बढ़ाने में मददगार है। यह तर्क भी दिया जा रहा है कि मनोरंजन के परंपरागत साधनों की अपेक्षा इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से मनोरंजन विद्यार्थियों के लिए काफी लाभप्रद है। ''इसी परिप्रेक्ष्य में उन्हें फेसबुक, ट्विटर, ब्लॉग आदि से जुड़ने और जोड़ने की सलाह दी जा रही है। इस उत्तर–आधुनिक युग की एक बड़ी सच्चाई यह है कि आज का विद्यार्थी एक समय भूखा रह सकता है, लेकिन अपने को मोबाइल/कंप्यूटर आदि से वंचित नहीं रख सकता।'' [9] इसीलिए भाषा–वैज्ञानिकों एवं शिक्षा–जगत् से जुड़े लोगों का मानना है कि विद्यार्थी को सोशल मीडिया से जोड़ना लाभप्रद होगा। उन्होंने विद्यार्थियों को सोशल मीडिया से जोड़े रखने के लिए पाँच उपायों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। पहला यह कि विद्यार्थियों के लिए एक फेसबुक पेज बनाया जाए, जिस पर उन्हें 'लाइक' तथा टाइम लाइन को अपडेट करने के लिए कहा जाए। फिर उन्हें प्रेरित किया जाए कि वे अनुवाद के औजारों का प्रयोग करते हुए अनुवाद करे, जिसकी सत्यता का मूल्यांकन अध्यापक द्वारा हो। दूसरा यह कि उनके लिए एक ट्विटर एकाउंट बनाया जाए। 140 कैरेक्टर की सीमा का ध्यान रखते हुए उन्हें ट्वीट करने के लिए उत्साहित किया जाए और यह देखा जाए कि विद्यार्थी संवाद–प्रक्रिया में भागीदार बनता है या नहीं। तीसरा यह कि यू–ट्यूब एकाउंट बनाया जाए और विद्यार्थियों से मनपसंद का ब्लॉग रिकॉर्ड करने के लिए कहा जाए। इसी तरह पिंटरेस्ट एकाउंट तथा ब्लॉग एकाउंट खोलकर बच्चों का भाषा–ज्ञान बढ़ाने की दिशा में प्रयत्न किया जाए। इस तरह के अधिगम और शिक्षण प्रक्रिया में सतत मूल्यांकन का विधान भी शामिल रखा जाना चाहिए। यह पूरी शिक्षण व्यवस्था ऑनलाइन आधारित है। जिसमें शिक्षक–शिक्षार्थी का प्रत्यक्षीकरण न संभव है और न जरूरी।

निष्कर्षः

भाषा शिक्षण का सोशल मीडिया पर काफी प्रभाव पड़ा है। उसका प्रबल सकारात्मक पक्ष यह है कि सोशल मीडिया के प्रयोग से विद्यार्थी के मन से झिझक और संकोच मिटता है तथा वह कक्षा से बाहर की दुनिया में प्रश्न पूछने के लिए उत्साहित होता है। उसमें जिज्ञासा का होना भी उसके भाषा–ज्ञान की वृद्धि में सहायक बनता है, फिर भी यह ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए कि विद्यार्थी सोशल मीडिया का दुरुपयोग तो नहीं कर रहा है। सदुपयोग विकास की ओर ले जाएगा तथा दुरुपयोग विनाश की ओर। इसलिए सदैव उचित–अनुचित का ध्यान रखा जाना चाहिए। इस प्रकार देखा जा सकता है कि भाषा–शिक्षण में सोशल मीडिया की अपनी एक महत्वपूर्ण योगदान है।

संदर्भ–स्रोतः

1. नवसंचार के जनाचार, न्यू मीडिया सोशल मीडिया विशेषांक, संपादक– संजय सहाय, हंस, सितम्बर–2018, नई दिल्ली (दरियागंज), पृष्ठ– 12
2. नवीन मीडिया प्रविधियाँ, लेखक– सोनी एस., बुक एंनक्लेव, जयपुर, 2009, पृ.– 63
3. इलेक्ट्रानिक मीडिया, लेखक– पी.के. आर्य, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, पृ.– 92
4. कथादेश मीडिया वार्षिकी, सं.– हरिनारायण, अप्रैल– 2011, पृ.– 21
5. मीडिया हूँ मैं, लेखक– जयप्रकाश त्रिपाठी, अमर प्रकाशन, रामबाग, कानुपुर, 2014, पृ.– 61
6. मीडिया लेखन सिद्धांत और व्यवहार, लेखक– डॉ. चन्द्रप्रकाश मिश्र, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ.– 74
7. उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक, लेखक– हर्ष देव, वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, 2001, पृ.– 79
8. सूचना प्रौद्योगिकी और समाचार पत्र, लेखक– रवीन्द्र शुक्ला, राधाकृष्णन प्रकाशन, पटना– 2008, पृ.– 34
9. मीडिया का वर्तमान परिदृश्य, लेखक– राकेश प्रवीर, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृ.– 97